Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-2, September-2019
Impact Factor:4.081
www.researchguru.net

मीडिया और संस्कृति

डॉ. तेजनारायण ओझा

सीनियर फैकल्टी महाराजा अग्रसेन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

संस्कृति मूल्य आधारित होती है जिससे मानव समाज का आभ्यांतरिक स्वरूप निर्मित होता है। संस्कृति का अध्ययन समग्रता के साथ ही मुकम्मल होता है। मानव व्यवहार के प्रत्येक घटक और आयाम संस्कृति की संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मीडिया संस्कृति के इन संरचनात्मक घटकों और आयामों की गति को प्रभावित करती है। मीडिया संस्कृति आपस में अन्योन्याश्रित होते हैं। मीडिया को संस्कृति का आवश्यक हिस्सा स्वीकार किया जाता है। संस्कृति को आगे बढ़ाने और पुष्ट करने की, प्रचारित और प्रसारित करने की जिम्मेदारी मीडिया की होती है।

वर्तमान समय धीरे धीरे वैश्विक संस्कृति में परिवर्तित होता जा रहा है, जिसमें मीडिया की अहम भूमिका है। संस्कृति लोगों में परंपराओं, मान्यताओ, खान-पान, वेशभूषा, प्रतीक चिन्हों के साथ साथ मिथकीय सूचनाओं के रूप में समाज में स्थापित होती है।

मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग करके अपने लिए वस्तुओं का निर्माण करता है। इसके लिए आवश्यक है कि मूल्यपरक शिक्षा और सांस्कृतिक शिक्षा को एक साथ संबंध करके देखा जाए, जिसको अभी अलग-अलग रूपों में देखा जाता है। प्रत्येक समय के अपने मूल्य होते हैं जो समय सापेक्ष बदलते रहते हैं। भारतीय संस्कृति में अनेक लोगों ने अपने समय के मूल्य को स्थापित किया और संस्कृति को पुष्ट किया। मीडिया प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य करती है। मीडिया संस्कृति को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त मीडिया अपने व्यवसायिक हितों की पूर्ति के लिए उपभोक्तावाद जैसी नई प्रवृतियों को जन्म भी देता है। इस तरह मीडिया संस्कृति को सकारात्मक और नकारात्मक तरीके से प्रभावित करता है। dkमीडिया संस्कृति का संवाहक है। परंपरागत रूप से यह देखा जाता है कि संस्कृति का विकास और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचरण मीडिया के माध्यम से ही होता है। इसलिए यह कहना ठीक ही है कि मीडिया और संस्कृति दोनो एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और दोनों एक दोनो से प्रभाव ग्रहण भी करते हैं। प्राचीन काल से अब तक की सामान्य तौर पर की गई समीक्षा से यह पता चलता है कि मीडिया का स्वरूप निरंतर बदला है तो सांस्कृतिक परिवर्तन भी निरंतर नया हुआ है।

की-वर्ड्स *: मूल्य आधारित संस्कृति, भारतीय संस्कृति, संयुक्त परिवार, बहुलतापरक संस्कृति, वैश्विक संस्कृति, संश्लेषनात्मक संस्कृति, मूल्यपरक शिक्षा, सांस्कृतिक शिक्षा, सभ्यता अपसंस्कृति, उत्तरआधुनिक संस्कृति।*

परिचय

मीडिया और संस्कृति का आपसी संबंध इतना अनुगामी है कि इन दोनों के मध्य जो बदलाव नजर आता है, वह एक दूसरे के विकास और परिवर्तन को सूचित करता है। इतिहास में अर्जित मानव सभ्यता की संपूर्ण जीवंतता तथा और उसकी पहचान का मूल्यांकन संस्कृति के द्वारा होती है। यह संस्कृति एक ऐसी प्रक्रिया और धरोहर का प्रतीक है, जिसमें अतीत और वर्तमान स्पष्ट दिखलाई देता है। मूल्य को संस्कृति का संवाहक माना जाता है जिससे मानव समाज का बाहरी और भीतरी स्वरूप निर्मित होता है। अत: यह सही है कि "**संस्कृति को यदि मूल्य मानकर चला जाए तो उसे समष्टिगत मूल्यों के रूप में ही स्वीकृति दी जाएगी**"।[1] अतः यह स्पष्ट दिखता है कि मूल्यों का कंपोजिट स्वरूप संस्कृति के भीतर दिखाई देता है। यह भी सही है कि संस्कृति में जो मनुष्य के जीवन की शक्ति है वह दरअसल " **प्रगतिशील साधनों की विमल विभूति, राष्ट्रीय आदर्शों की गौरवमयी मर्यादा और स्वतंत्रता की वास्तविक प्रतिष्ठा है**"।[2] अतः बहुत ही सहज रूप से यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं कि "संस्कृति मानव-व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र से संबंध रखती है"।[3]

यदि संस्कृति का अध्ययन किसी एक घटक पर किया जाए तो वह अमूर्त और अधूरा होगा। अतः इसका अध्ययन समग्रता में ही करना उपयुक्त है और यह भी सत्य है कि जीवन से पृथक करके संस्कृति को नहीं देखा जा सकता। मानव जीवन में व्याप्त सभी व्यवहार संस्कृति में अपनी संपूर्ण अर्थवत्ता और चेतना के साथ

[1] डॉ देवराज - संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, पृष्ठ संख्या-159

[2] स्वामी राघवाचार्य - हिंदू संस्कृति, कल्याण विशेषांक, पृष्ठ संख्या 40

[3] जवरीमल्ल पारख - संचार माध्यम और सांस्कृतिक विमर्श, पृष्ठ संख्या 33

विद्यमान रहता है। "**मनुष्य का पहनना-ओढ़ना, खाना-पीना, रचना, सोचना, बोलना, लिखना कौन सा ऐसा कार्य है जिसमें संस्कृति की अभिव्यक्ति नहीं होती या जिससे संस्कृति की निर्मिति नहीं होती**"।[4]

तो यह बिल्कुल तय है कि संस्कृति की सुनिश्चित नीर्मिति में मानवीय जगत की सूक्ष्म और वृहत्तर कार्य शैलियां योगदान करती हैं। इनके अध्ययन के बिना संस्कृति का समग्र मूल्यांकन असंभव है। किसी भी संस्कृति की निर्मिति में मीडिया की सकारात्मक भूमिका यह है कि वह संस्कृति की तमाम संरचनाओं, अधिसंरचनाओं की गति को बढ़ा देता है। अतः मीडिया तथा संस्कृति दोनों की एक दूसरे पर इस प्रकार निर्भर हैं कि दोनों में आए परिवर्तनों के द्वारा वे आपस में प्रभाव ग्रहण करने लगते हैं। "**वह स्वयं में एक सांस्कृतिक उत्पाद है तथा इस रूप में वह संस्कृति का अंग है**"।[5]

अतः जितनी महत्वपूर्ण भूमिका मीडिया की होती है उसे देख कर कहना अप्रासंगिक नहीं है कि मीडिया को एक सांस्कृतिक वैभव के तौर पर देखा जाए। इस संदर्भ में मीडिया और संस्कृति का संबंध दोहरे मानदंडों पर विकसित हुआ करता है। इसलिए संस्कृति के संदर्भ में विचारक कार्ल मार्क्स कहता है कि " **संस्कृति की जड़ें मानव के दोहरे चरित्रों में होती है**"।[6]

संस्कृति को अनेक अर्थ और परिभाषाओं में देखने समझने की पंरपरा रही है। असल में संस्कृति इनके विस्तृत और कंपोजिट अर्थों वाली अवधारणा है। इसकी समझ कहीं न कहीं अनुभव और चिंतन से बाहर की दिखती है। निष्कर्ष यह प्राप्त होता है कि संस्कृति के संदर्भ एवं विस्तार की इतनी व्यापकता है कि उसमें समग्र मानव समुदाय अपनी अवधारणा और व्यवहारिक कार्यशैलियों की बोधात्मक प्रक्रिया के साथ मौजूद है। संस्कृति हमारी विकास यात्रा की सुदीर्घ परंपरा को संजो कर रखती है, अतः इसमें सिद्ध अनुभवों और चेष्टाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता दिखता है तो संस्कृति किसी भी मानवीय समाज की जीवन यापन की परंपरागत लेकिन निरंतर प्रवाहमान रीति है जो कि आनुषंगिक रूप से समय के साथ नवीन मानव समुदायों में संचरित होती रहती है।

विचारों के ज्ञान भंडार अथवा संस्कृति को आगे बढ़ाने, पुष्ट करने तथा प्रचारित, प्रसारित करने का दायित्व मीडिया का है। इसलिए मीडिया की भूमिका सर्वथा बड़ी दिखती है। अतएव यह कथन सत्य है कि **"मीडिया संस्कृति का दर्पण है"**।[7] मीडिया की भूमिका साधन की है तो उसके लिए साध्य है संस्कृति। तो साध्य और साधन एक दूसरे की चेतना को समझ कर काम करते हैं। आज वैश्विक संस्कृति का दौर है जिस के विकास में मीडिया का अपना सरोकार आज की भूमंडलीकरण संरचना को देखकर यह कहना सर्वथा उचित है कि मीडिया केवल साधन नहीं है अपितु वह परिवर्तन का में कारक है। इसी संदर्भ में मैक्लुहान का कहना है कि **"मीडिया का अर्थ मध्यस्थता का है जो दो बिंदुओं को आपस में जोड़ने का कार्य करता है, व्यवहारिक दृष्टि से मीडिया एक ऐसा सेतु है जो विभिन्न समूहों को एक विचारधारा में जोड़ता है"**।[8] तो यह स्पष्ट है कि मीडिया एक ओर सांस्कृतिक निर्माण करती है तो दूसरी ओर उसके गति को तीव्र कर देती है। इस भूमिका को तय करने अथवा प्राप्त करने में मीडिया के अनेकानेक संस्थानों की भूमिका निश्चय ही बड़ी होती है, मसलन टेलीविजन रेडियो प्रिंट मीडिया तथा इंटरनेट और उसके सहयोगी घटक।

संस्कृति लोगों में परंपराओं मान्यताओं, खान-पान, वेशभूषा, प्रतीकचिन्हों के समानांतर मिथकीय बिंबों के रूप में संचरित करती रहती है। अतः संस्कृति निरंतर समाज की जीवंतता तथा उसके कंपोजिट कल्चर को आगामी पीढ़ी के समक्ष रखती है और उसके अनुरूप कार्य करने का परिवेश उपलब्ध कराती है।

भारत की संस्कृति बहुआयामी एवं बहुलक है। इसमें तरह-तरह की जातियों, भाषाओं और संवेदनाओं के तत्व शामिल हैं। इस तरह, संस्कृति एक प्रकास से संश्लिष्ट स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती नजर आती है। इसके साथ ही हमारी संस्कृति जाति बहुलक संरचनाओं की उपज है। उसके साथ ही पश्चिमी समाज की एकल परिवार से जुड़े विचारणा के बरक्स संयुक्त परिवार की विचारणा पर संचरित होने वाली संस्कृति है। इसमें परिवार के सारे सदस्य साथ रहते हैं, जिसमें सबसे वरिष्ठ सदस्य परिवार का दायित्व संभालता है। भारत की संस्कृति में विवाह की अपनी एक अलग पहचान है। परिवार के सारे सदस्यों का आपस में विचार विमर्श और

[4] वही, पृष्ठ संख्या 33

[5] जवरीमल्ल पारख - संचार माध्यम और सांस्कृतिक विमर्श, पृष्ठ संख्या 37

[6] कार्ल मार्क्स- द जर्मन आईडियोलॉजी

[7] एन.सी.पंत, मीडिया लेखन का सिद्धांत, आवरण पृष्ठ

[8] मैकल्यूहान, अंडरस्टैंडिंग मीडिया, मैकग्रो हिल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 55

सहमति होने के बाद ही विवाह संस्कार संपूर्ण होता है। सच तो ये है कि भारत के संदर्भ में यह बहुत ही प्राचीन धारणा थी कि यह एक संपन्न देश है तभी तो इसको सोने की चिड़िया के रूप में देखा जाता था तथा दूसरी धारणा यह थी कि यह मसालों का देश है। यही कारण है कि ज्योग्राफिकल विभिन्नता में व्यंजनों की भिन्नता और स्वाद दिखाई देता है। हर प्रांत की अपनी भोजन प्रकृति है जो उसकी पहचान से संबद्ध है तथा इसके साथ ही ज्योग्राफिकल परिवेश में भाषा की विभिन्नता भी दिखती है। यह 'लिंग्वल डाइवर्सिटी' बहुलक संस्कृति की अपनी पहचान होती है।

संस्कृति के निर्माण की चरणबद्ध प्रक्रिया में लोक व समाज की अपनी महत्वपूर्ण स्थिति है। इसलिए यह कहना वाजिब ही है कि जब तक लोक समृद्ध नहीं होगा तब तक सांस्कृतिक संपन्नता की बात नहीं की जा सकती। लोक मान्यताएं, मिथक और दंत कथाएं हमारी संस्कृति के महत्वपूर्ण संरचनात्मक घटक हैं और हमारी पहचान के सूत्र भी। बहुलक संस्कृति की अपनी विशेषता यह होती है कि उसमें बड़ी संरचना के भीतर उसे साधने वाली और सूक्ष्म संरचनाएं विद्यमान रहती हैं जो उसे और भी जीवंत तथा संश्लिष्ट रूप प्रदान करती हैं।

सांस्कृतिक विकास हेतु शिक्षा की अपनी एक भूमिका है जिसे महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षा संस्कृति के अंत:प्रवाह का ऐसा अंतरर्भुक्त घटक है जहॉ उसकी संवेदनात्मक और ज्ञानात्मक स्थिति साथ होती है। तो कहना असंगत नहीं होगा कि शिक्षा और संस्कृति का अपना संबंध बोधात्मक होता है अनुभव पर एक होता है। हवाई जहाज के उदाहरण से इसको सिद्ध किया जा सकता है कि शिक्षक कहता है कि हवाई जहाज उड़ता है लेकिन छात्र कहता है कि वह पहले दौड़ता है और फिर उड़ता है। यह बोध की प्रक्रिया है जो शिक्षा अनुभव की सहायता से सांस्कृतिक प्रक्रिया को सम्पन्न करती है। इसलिए 1986 में भारत में जो अध्यापन नीति तय की गई जिसमें संस्कृति और शिक्षा के संबंध को व्याख्यायित किया गया और यह सिद्ध करने dhकी कोशिश की गई कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

उत्पादक और उत्पादन के आपसी संबंध मानव के बौद्धिक विकास यात्रा का दस्तावेज है। इसकी पड़ताल से भी सांस्कृतिक विकास का मूल्यांकन किया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर पशु-पक्षी पारिस्थितिक अनुकूलन के साथ अपने आप को विकसित और सुरक्षित रखते हैं। किसी भी सांस्कृतिक प्रक्रिया में इन सभी स्थितियों का समायोज्य होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि मूल्यपरक शिक्षा और कल्चरल एजुकेशन का समन्वित रूप प्रस्तुत किया जाए जोकि अभी दिखाई नहीं दे रहा है। संस्कृति पर विचार करते समय सभ्यता को छोड़ा नहीं जा सकता। यह कहना असंगत नहीं होगा की सभ्यताएं संस्कृतियों का बाह्य प्रत्यक्षीकरण करती है। इनको देखकर संस्कृति में निहित विकास के तत्वों की महत्ता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष:

प्रत्येक समय के अपने मूल्य होते हैं जो समय सापेक्ष बदलते रहते हैं। यह सर्वविदित है कि भारत ऐसे महानुभवों से समृद्ध है जिन्होंने समकालीन समय में मूल्यों का स्थापन किया और इस तरह संस्कृति ने एक आधार ग्रहण किया। जैसे भगीरथ, दधीचि, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, पन्ना दाई इत्यादि। इस तरह 'सांस्कृतिक संकुल' की निर्मिति हुई। मीडिया के माध्यम से पिछली पीढ़ी की संस्कृति अगली पीढ़ी में संचरण करती नजर आती है। मीडिया की यह रूप महत्वपूर्ण और सराहनीय है। इस तरह मीडिया संस्कृति पर अपना प्रभाव स्थापित करता है। इतना ही नहीं, मीडिया के अपने जो व्यवसायिक हित हैं, उसकी पूर्ति के लिए संस्कृति सहयोगी भूमिका में नजर आती है। यह इस भौतिक जगत में नई प्रवृत्तियों को जन्म देता है, जैसे उपभोक्तावाद। इस तरह हम पाते हैं कि वर्तमान मीडिया संस्कृति के अंत:प्रवाह को दोनों दिशा में प्रभावित करता है- एक आदर्श और सही दिशा में तो दूसरा गलत दिशा में।

मीडिया का अपना एक नैतिक सरोकार होता है, जिससे संस्कृति के उन मूल्यों को अर्जित किया जा सके, जिससे मानव समुदाय का विकास हो, उसमें सकारात्मक भावना का उदय हो। यह आदर्श स्थापना का कोई नैतिक घोषणा नहीं करता, यथार्थ के निदर्शन में यह अपसंस्कृति और उत्तरआधुनिक संस्कृति को पनपने का अवसर देता है या यूं कहें कि उसके प्रचार में सहयोग की भूमिका में आ जाता है। संस्कृति निर्माण एक लंबी प्रक्रिया है और उसके लिए कई घटक हैं जो इस प्रवाह को गति देने का कार्य करते हैं। मीडिया उनमें से एक महत्वपूर्ण घटक है जो संस्कृति के पक्ष को उभारने, नकारने, बनाने, बिगाड़ने की तमाम कोशिशों के बीच अपनी भूमिका तलाशता है, इस तथ्य से बेपरवाह कि काल के सतत प्रवाह के बीच संस्कृति अपने निर्माण के लिए लंबा अंतराल चुनती है।

मीडिया संस्कृति का संवाहक है। परंपरा से यह देखा गया है कि मीडिया के मदद से ही दूसरी पीढ़ी में संचरण हुआ करता है। यह कहना संगतप्राय: है कि संस्कृति और मीडिया दोनो ही एक दूसरे को गहरे अर्थों में अपने प्रभाव में रखते हैं तथा वे दोनों एक दूसरे से प्रभाव ग्रहण भी करते हैं। पुराने समय से अभी तक की सामान्य तौर पर की गई समीक्षा से यह अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है कि मीडिया का स्वरूप निरंतर बदला है तो सांस्कृतिक परिवर्तन भी निरंतर नया हुआ है। संस्कृति और मीडिया एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़े होते हैं। दोनों में जो परिवर्तन नजर आता है वह विकास और बदलाव का निदर्शन होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] डॉ देवराज - संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग, उ.प्र. संस्करण 1957

[2] स्वामी राघवाचार्य - हिंदू संस्कृति, कल्याण विशेषांक, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण-1950

[3] जवरीमल्ल पारख - संचार माध्यम और सांस्कृतिक विमर्श

[4] कार्ल मार्क्स- द जर्मन आईडियोलॉजी, प्रोमेथीयस बुक्स, मॉस्को, संस्करण-1980

[5] एन.सी.पंत, मीडिया लेखन का सिद्धांत, तक्षशीला प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012

[6] मैकल्यूहान, अंडरस्टैंडिंग मीडिया, मैकग्रो हिल प्रकाशन, संस्करण-1964

[7] रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-1956

[8] मानवेंद्रनाथ राय, संस्कृति क्या है, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, संस्करण ; 2003

[9] सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय संस्कृति: कुछ विचार, राजपाल एंड संस प्रकाशन, दिल्ली संस्करण- 2005